कांगड़ा बैंक पत्रिका

Kangra Bank Patrika

(A Mouth Piece of the Kangra Cooperative Bank Ltd.)

C-29, Community Centre, Pankha Road, Janakpuri, New Delhi-110 058
Ph. : 011-25500800, 25515969, Telefax : 011-25525565
E-mail : md@kangrabank.com

वर्ष 4, अंक 03
अक्तूबर 2017

सम्पादक मण्डल
अध्यक्ष
लक्ष्मी दास
9968279250

सम्पादक
बी. आर. शर्मा
9312223237

प्रकाशक एवं मुद्रक
अतर चन्द परमार
9810742649

सदस्य
स्नेह लता शर्मा
9810509821

सदस्य
जितेन्द्र शर्मा
9971338889

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

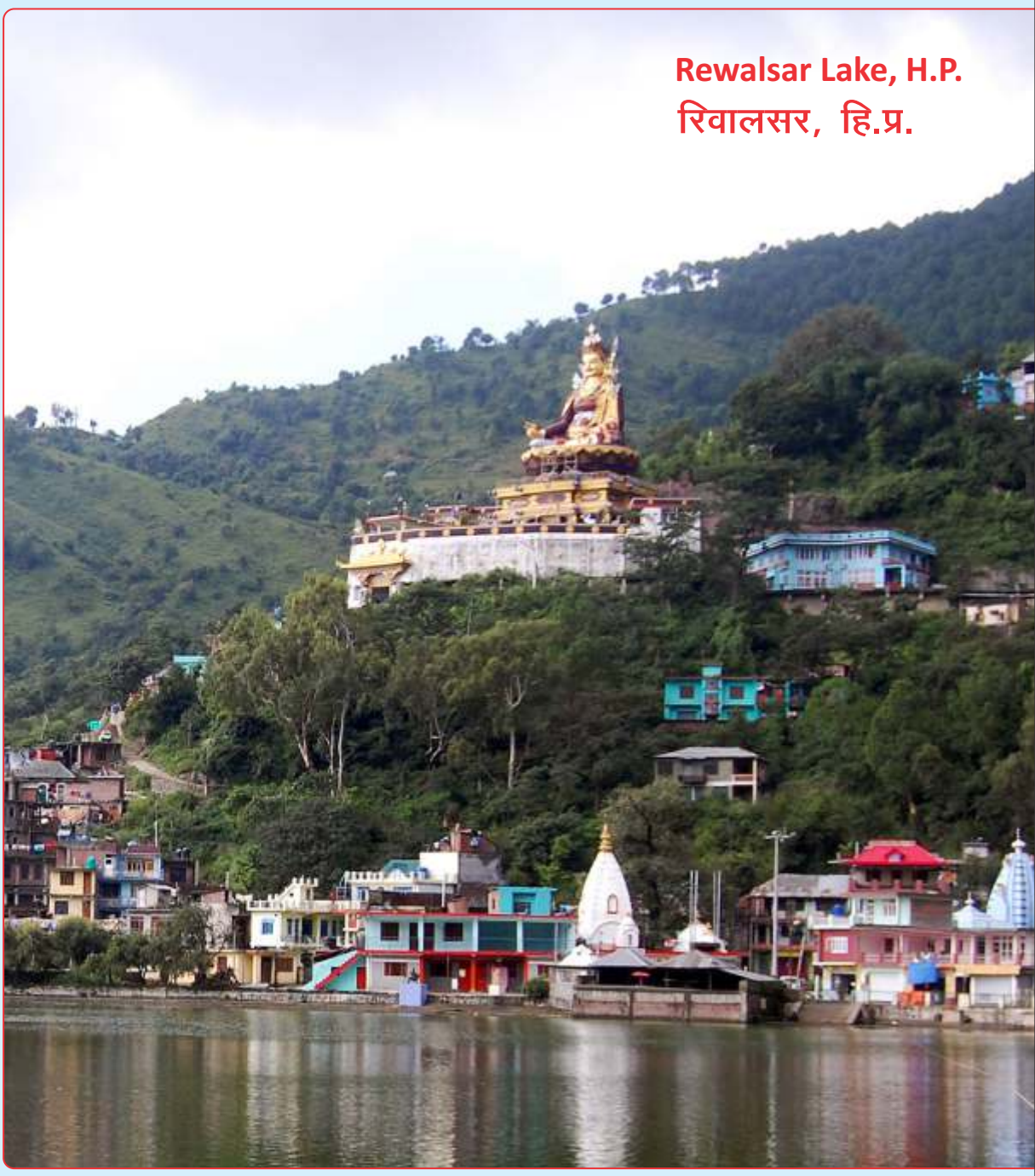

Rewalsar Lake, H.P.
रिवालसर, हि.प्र.

आपकी समृद्धि, हमारा संकल्प, आओ मिलकर साथ बढ़ें
दी कांगड़ा को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

सम्पादकीय

- बी. आर. शर्मा

सहकारी बैंक की प्रगति में विश्वसनीयता (Credibility) तथा बुद्धिमत्ता (Wisdom) का सामंजस्य

बैंक का काम पैसा इकटठा करना (Fund Mobilisation) तथा उसे ठीक जगह लगाना (Right Investment) है। यदि यह दो काम भलीभांति तथा सूझबूझ से हो जाएं तो बैंक सदैव तरक्की करता रहेगा, अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेगा तथा समाज सेवा भी कर सकेगा। पहला काम पैसा लेना है। अब पैसा कहां से आयेगा? सहकारी बैंक में पैसा सदस्यों से भी आता है। सदस्य बैंक के शेयर खरीदता है, जिसके लिए पैसा देता है तथा दूसरे खाते खोल कर भी पैसा देता है, पब्लिक के लोग भी बैंक में डिपाजिट देते हैं।

बैंक में डिपाजिट लाने के लिए विश्वसनीयता (Credibility) की बहुत आवश्यकता होती है। यदि बैंक की विश्वसनीयता है तो बैंक में पैसा लाने में कोई कठिनाई नहीं होती। विश्वसनीयता तीन स्तर की होती है।

विश्वसनीयता बैंक की, विश्वसनीयता बैंक के निदेशक मण्डल की, तथा विश्वसनीयता बैंक के कर्मचारियों की। बैंक का डिपाजिट बढ़ रहा है, बैंक की सदस्यता, ग्राहक संख्या बढ़ रही हो, बैंक लाभ कमा रहा हो, बैंक लोगों को जमा राशियों पर उचित ब्याज दे रहा हो तथा जब डिपाजिटर को पैसे की आवश्यकता हो तुरन्त उसे उसका डिपाजिट (Deposit) दे दिया जाए। यदि उपरोक्त बातें हों तो बैंक में लोगों का विश्वास रहेगा।

निदेशक मण्डल की विश्वसनीयता तब होगी जब निदेशक मण्डल सदस्य ईमानदार हों, सूझबूझ से बैंक की तरक्की के लिए योजनाएं बनाएं, बैंक कार्यो में रूचि लें, उनका अपना निजी स्वार्थ न हो तथा जिन्हें वित्त सम्बन्धी बातों की जानकारी हो।

बैंक स्टाफ की विश्वसनीयता तब होगी जब बैंक कर्मचारी अनुशासन से, ईमानदारी से, नम्रता से ग्राहकों को तुरन्त सेवा दें तथा सदैव मन में इस बात का ध्यान रखें कि बैंक की तरक्की में ही उनकी Growth है। जब बैंक की, बैंक बोर्ड की तथा बैंक स्टाफ की पब्लिक में Credibility होगी तो लोग स्वतः बैंक से जुडेंगे बैंक का सदस्य बनेंगे तथा बैंक को डिपाजिट देंगे।

बैंक का दूसरा काम है प्राप्त हुए डिपाजिट को सूझबूझ (Wisdom) के साथ Invest करना। बैंक दो जगह अपना पैसा लगाता है। लगभग 22.5% उसे रिजर्व बैंक के निदेशानुसार लगाना होता है। जहां से उसे लाभ तो होता है परन्तु बहुत कम क्योंकि इस Investment पर ब्याज बैंक स्वयं निर्धारित नहीं करता, परन्तु डिपाजिट देना उसके लिए अनिवार्य है। बैंक की आय का एकमात्र साधन सूझबूझ के साथ दिए गये ऋणों से आने वाला ब्याज है। ऋणों पर ब्याज बैंक स्वंय निर्धारित करता है तथा प्राप्त हुए डिपाजिट पर दिए जाने वाले ब्याज से इतना अधिक रख सकता है जिससे उसके खर्च निकलें तथा लाभ भी हो सके। अच्छे ऋण देने के लिए निम्नलिखित ध्यान रखना जरूरी है :-

1. ऋण की प्रार्थनापत्र में वे सब जानकारी प्राप्त हो सके जो ऋण पर विचार करने के लिए आवश्यक हो।
2. ऋण प्रार्थना पत्र के सभी कालम पूरी तरह भरे हों।
3. प्रार्थना पत्र में दी गई आय की पूरी तरह जांच की जाए कि क्या उसमें कोई अप्राकृतिक (Artificial) बढ़ोतरी तो नही दिखाई गई है।
4. ऋण लेने वाने सदस्य द्वारा गिरवी रक्खे जाने वाले Assets की Physical Verification की जाए। विशेषकर उसके मूल्यांकन की। प्रापर्टी की सर्च रिपोर्ट को ध्यान से पढ़ा जाए।
5. ऋण स्वीकार करने वाली कमेटी निष्पक्ष रूप से ऋण पर विचार करे।

इस प्रकार यदि बैंक में Credibility तथा Wisdom का सामंजस्य ठीक प्रकार का हो तो बैंक में डिपाजिट भी आएगा, बैंक का पैसा ठीक प्रकार से Invest होगा, बैंक का एन.पी.ए. कम रहेगा तथा बैंक की बढ़ोतरी में कोई रूकावट नहीं आएगी।

B.R. Sharma
Editor

बैंक की 49वीं वार्षिक आम साधारण सभा का आयोजन 27-08-2017 को सफलता पूर्वक किया गया

कांगड़ा बैंक के, अध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास जी के, बैंक की आम सभा में दिये गए भाषण के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं :-

प्रस्तुत कर्त्ता -
संजीव धीर
सी.ई.ओ. कांगड़ा बैंक

श्री लक्ष्मीदास ने कहा कि कांगड़ा बैंक की शुरूआत एक सहकारी समिति के रूप में हुई थी। लेकिन आज यह बैंक शनैः शनैः, लेकिन मजबूती से आगे बढ़ते हुए, नई-नई ऊंचाईयों को छू रहा है। लेकिन इन ऊंचाईयों को छूते हुए भी हम अपनी जड़ों को, अपनी बुनियाद को, अपनी जमीन को नहीं भूलते। हमें, हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित किये गए नैतिक मूल्यों का हमेशा ध्यान रहता है। मुझे उन सब लोगों से मिलने या उनके साथ काम करने का मौका तो नहीं मिला, लेकिन आज श्री बलदेव राज शर्मा हमारे बीच हैं जिन्होंने इस बैंक में, बैंक सिद्वान्तों को सम्भाला हुआ है और इसकी बुनियाद को मजबूत रखा है। इस बैंक के विकास में श्री बलदेव राज शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जब इस बैक की शुरूआत हुई थी, तो यह कल्पना करना कठिन था कि एक दिन आएगा जब यह कांगड़ा बैंक, एक हजार करोड़ रूपये की पूंजी की सीमा पारकर जाएगा। बल्कि जब एक सहकारी समिति से इसे, बैंक का रूप देने की बात सामने आई, तब भी, कई शंकाएं और अनिश्चितताएं निर्णय को प्रभावित कर रही थीं। लेकिन सख्त परिश्रम, प्रतिबद्धता, समर्पण और बैंक के निर्देशक मण्डल के कुशल मार्गदर्शन के कारण, कांगड़ा बैंक लगातार प्रगति की राह पर है। हमारे बैंक का विकास सतत और टिकाऊ है।

श्री लक्ष्मीदास ने कहा कि आज कांगड़ा बैंक का सदस्य गर्व के साथ यह दावा कर सकता है कि यदि उसकी आवश्यकता और पात्रता होगी तो वह 9 करोड़ तक का ऋण, कांगड़ा बैंक से प्राप्त कर सकता है। यह कोई कम उपलब्धि नहीं है। अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों की सम्मानित उपस्थिति को बताया कि कांगड़ा बैंक के निर्देशक मण्डल ने, अपने निर्णय समझदारी से लिए। जैसे पहले अपनी स्थिति को मजबूत करना, इसकी वितीय स्थिति को मजबूत करना और फिर इस बैंक के विस्तार का निर्णय लेना। इसलिए पिछले 2-3 वर्षो में बैंक का विकास तो हुआ, लेकिन हमने रिजर्व बैंक से, नई शाखांए नहीं मांगी। नई शाखाएं खोलने का हमारे ऊपर दबाव भी था परन्तु हमने उचित समय का इन्तजार किया और जब हमने महसूस किया कि, हम बैंक की शाखाएं, बढ़ाने की स्थिति में हैं तो हमने रिजर्व बैंक से तीन नई शाखाओं की स्वीकृति मांगी और मुझे, आपको यह सूचित करने में खुशी हो रही है कि, रिजर्व बैंक ने, बैंक की मजबूती को देखते हुए, बैंक द्वारा मांगी गई तीनों शाखाओं के लिए स्वीकृति प्रदान की। इस तरह आपका बैंक, कांगड़ा बैंक सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ते हुए इस वित्तीय वर्ष में 9 की बजाय 12 शाखाओं वाला बैंक बन जाएगा।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि वर्तमान में बैंक चलाना एक बड़ा कौशल है क्योंकि बैंक चलाने के नियमों में परिवर्तन तो हो ही रहे है। नियामक मण्डलों जैसे रिजर्व बैंक और रजिस्ट्रार को-आप्रेटिव सोसाइटीज खाता धारकों के हित में, नियमों को सख्त कर रहे हैं। वैसे भी यह युग

स्पर्धा का युग है। सरकारी बैंकों को भी राष्ट्रीय कृत बैंको और अर्न्तराष्ट्रीय बैंको के साथ स्पर्धा में खड़ा रहना है। सहकारी बैंको को दी गई विशेष सुविधाएं, सरकार पीछे खींच रही है। पिछले दिनों विमुद्रीकरण की इक चुनौती बैंक के सामने आई। बड़ी कठिन परिस्थिति थी। तरल पूंजी का अभाव था, जिन लोगों का पैसा हमारे पास जमा था, वह अपनी आवश्यकता के लिए पैसा निकालना चाहते थे लेकिन हमारे बैंक के पास, पैसा देने की सीमाएं थी। कठिन परिस्थित थीं। सबको संभालना था। नियमों का पालन भी करना था और लोगों की आवश्यकताएं भी पूरी करनी थीं। बैंक के निदेशक मण्डल ने सूझ-बूझ के साथ निर्णय किये। सारी परिस्थिति को संभालने का प्रयास किया। उचित प्रयास करते हुए भी कई सदस्यों को कठिनाई का सामना करना पड़ा। उनकी नाराजगी भी हमें सहनी पड़ी। लेकिन आज मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि विमुद्रीकरण के बाद, विमुद्रीकरण से सम्बन्धित रिजर्व बैंक ने, कांगड़ा बैंक का दो बार निरीक्षण किया और आप सबके सहयोग से, कांगड़ा बैंक इन निरीक्षणों में खरा उतरा है। कांगड़ा बैंक के अध्यक्ष ने उपस्थित सदस्यों को बताया कि यह बैंक, ऋण देते समय, उच्च स्तरीय स्पष्टता और पारदर्शिता के नियमों का पालन करता है। हमने ऋण देने के जो नियम बनाए हैं, वे सभी व्यापक स्तर पर प्रसारित किए गए हैं। कोई भी सदस्य, ऋण का प्रार्थना पत्र भरते समय, ऋण नियमों का अध्ययन करके, यह जान सकता है कि ऋण के लिए उसकी कितनी पात्रता है। सब कुछ स्पष्ट है। कुछ भी छिपा नहीं है। निर्धारित नियमों के अनुसार निर्णय लेते है। इस तरह, बैंक के निदेशक मण्डल ने, ऋण सम्बन्धी, अपने सारे अधिकार, पारदर्शी ऋण नियम बनाकर, सदस्यों के हवाले कर दिए हैं। इस पर भी समय पर सदस्यों या कर्मचारियों के जो सुझाव आते हैं। उन पर निदेशक मण्डल चर्चा करके, नियमानुसार संशोधन करता रहता है। ऋण देने की यह हमारी पारदर्शी और विश्वसनीय व्यवस्था है।

बैंक के अध्यक्ष ने NPA के विषय पर अपना दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि इस बैंक के 94% सदस्य ऐसे हैं जो ऋण लेते हैं और समय पर उसका भुगतान करते हैं। मात्र 6% सदस्य ऐसे हैं जो भुगतान में दोषी होते हैं। लेकिन इन 6% सदस्यों के कारण बैंक को रिजर्व बैंक की नाराजगी सहनी पड़ती हैं। बैंक के लाभ का बड़ा हिस्सा इस दोष में चला जाता है। सदस्यों को डिविडैन्ड देना कठिन हो जाता है। बैंक का विकास अवरूद्ध होता है। इस बार तो और भी दुःख की बात हुई कि यह बैंक शैडयूल बैंक बनने की सारी शर्तो को पूरी करते हुए भी शैडयूल बैंक बनने के लिए रिजर्व बैंक को निवेदन नहीं कर सका, क्योंकि शैडयूल बैंक के लिये रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित 5% से कम NPA की शर्त हम पूरी नहीं कर पाए। अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को बताया कि हमारे सारे प्रयास, 6% NPA होने के कारण बेकार चले गए। उन्होंने सदस्यों से अपील की कि बैंक के सभी सदस्यों को ऋण का भुगतान समय पर करना चाहिए और जो सदस्य किश्तें नहीं देते हैं उन पर सामाजिक दबाव पैदा करना चाहिए ताकि कुछ सदस्यों के कारण, बैंक के सभी सदस्यों को इसकी कीमत न चुकानी पड़े। बैंक का NPA न हो या कम से कम हो, इसका सभी सदस्यों और कर्मचारियों को प्रयास करना चाहिए। बैंक के सफल संचालन में, NPA एक बहुत बड़ी बाधा है। यदि बैंक का NPA 5% से कम हो जाए तो कांगड़ा बैंक, दिल्ली का सहकारी क्षेत्र में, प्रथम शैडयूल बैंक होगा। अध्यक्ष ने बताया कि कांगड़ा बैंक का निर्देशक मण्डल, समय पर, अपने सदस्यों के लिये ब्याज की दरें कम करता रहता है। कभी-कभी कुछ विशेष स्कीमें भी निकाली जाती हैं जो सीमित समय तक लागू रहती हैं। इस समय कांगड़ा बैंक की दो स्कीमें चल रही हैं। एक ट्रांसपोर्ट के लिए है। कांगड़ा बैंक ने, गाड़ियों पर, 8.5% ब्याज दर निश्चित की है, और यदि कोई सदस्य अपने घर का पुर्ननवीनीकरण करना चाहता है तो उसे 9% ब्याज पर पाँच लाख तक का ऋण मिल सकता है। यह स्कीम 31 अक्तूबर तक जारी रहेगी और पांच नवम्बर तक, सदस्य, स्वीकृत ऋण प्राप्त कर सकेंगे। गाड़ियों के ऋण के लिये हमने, बैंक के मुख्यालय में एक समिति बनाई है जो 24 घंटे में गाड़ी का ऋण पास करती है यदि ऋण प्रार्थना पत्र निर्दोष है तो कांगड़ा बैंक ने, रिजर्व बैंक के दिशा निर्देशों अनुसार, बैंक के मुख्यालय को भी CBS युक्त कर दिया है। बैंक ने तकनीक के क्षेत्र में, अपनी सामर्थ्य और खाता धारकों की आवश्यकतानुसार सभी कार्य पूरे किए हैं और यह प्रक्रिया सतत जारी है। बैंक का, नियमानुसार, रिजर्व बैंक ने निरीक्षण किया है। यह आप सबको मालूम है कि कांगड़ा बैंक का हर दो वर्ष में रिजर्व बैंक निरीक्षण करता है। कांगड़ा बैंक का निरीक्षण अद्यतन है।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि कांगड़ा बैंक ने, बीते वित्तीय वर्ष में चहुँदिश और समग्र विकास किया है। चाहे जमा

राशियां हों, कर्ज राशियां हो, सदस्य संख्या हो, कर्मचारियों के वेतन का प्रश्न हो, कर्मचारियों की सुविधाओं का प्रश्न हो, खाता धारकों की संख्या का प्रश्न हो, तकनीक का क्षेत्र हो। इन सब क्षेत्रों में बैंक ने विकास दर्ज करवाया है। तकनीक के क्षेत्र में तो हम आज भी किसी बैंक से कम नहीं हैं फिर भी आवश्यकता पड़ने पर, और अधिक संसाधन भी तकनीक के विकास के लिए इस्तेमाल करने को तैयार हैं। वशर्ते उसका उतना उपयोग हो।

जैसा कि बैंक की आम सभा ने निर्णय किया है कि बैंक के लिए दो नए भवन खरीदे जाए। बैंक निर्देशक मण्डल ने इस दिशा में प्रयास किया है और उम्मीद है कि रोहिणी शाखा के लिए अपना स्थान खरीदने में हमें सफलता मिल जायेगी। भवन खरीदने के लिये बैंक के पास, पैसे का अभाव नहीं है। लेकिन बैंक की आवश्यकतानुसार और नियमानुसार भवन मिलने में कठिनाई आती है। बैंक तो नियमानुसार ही भवन खरीद सकता है। इस दृष्टि से जब भी कोई उपयुक्त स्थान मिलेगा तो बैंक अवश्य ही उस भवन को खरीदने का प्रयास करेगा।

अध्यक्ष महोदय ने बैंक के कर्मचारियों की सुविधाओं पर चर्चा करते हुए सभा को बताया कि कांगड़ा बैंक ने सातवें वित्त आयोग की सिफारिशों को, बैंक कर्मचारियों पर लागू कर दिया है इतना ही नहीं, सातवें वित आयोग के अर्न्तगत जो सुविधाएं सरकार ने बाद में घोषित की है, कांगड़ा बैंक ने अपने कर्मचारियों को वह सुविधाएं भी लागू कर दी हैं। यद्यपि इन सब सुविधाओं के कारण, बैंक पर वितीय दबाव बढ़ा है। लेकिन जहाँ कर्मचारियों के वेतन आदि का प्रश्न होता है, बैंक का निर्देशक मण्डल इस पर खुले दिल से विचार करता है और निर्णय लेता है। बैंक के कर्मचारी बैंक के निर्देशक मण्डल की हमेशा, पहली प्राथमिकताओं में रहते हैं। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने सभा को बताया कि बैंक निर्देशक मण्डल के सतत प्रयास, सदस्यों का भरपूर सहयोग, कर्मचारियों द्वारा निर्णयों का सही दिशा और समय पर पालन इस सबके कारण, कांगड़ा बैंक तरक्की की राह पर है। इतने बड़े संगठन को एक व्यक्ति या एक समूह नहीं चला सकता। इसके लिए सबका सहयोग आवश्यक होता है। यह खुशी की बात है कि कांगड़ा बैंक के निर्देशक मण्डल को सभी वर्गो का भरपूर सहयोग मिलता है। निर्देशक मंडल एक जुट है। एक रूप है। सर्व सम्मति से निर्णय लेते हैं। खूब चर्चाएं होती है। प्रस्तुत प्रस्ताव के नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं पर खुली चर्चा होती है। सभी को अपनी बात कहने की पूरी आज़ादी है और अवसर मिलता है। इस तरह गहन चर्चा के बाद लेकिन सर्व सम्मति से निर्णय लिये जाते हैं। मेरा पूरा विश्वास है कि जब तक हम एक रहेंगे तब तक यह बैंक तरक्की की नई-नई ऊचाईयों को छूता रहेगा।

अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थित सदस्यों और कर्मचारियों को, कांगड़ा बैंक की, 49वीं आम सभा की सफलता के लिए धन्यवाद दिया और आभार व्यक्त किया।

सैनिक की अंतिम इच्छा :

साथी घर जाकर मत कहना, संकेतों में बतला देना

यदि हाल मेरी माता पूछे, मुरझाया फूल दिखा देना
यदि इतना कहने से न माने, जलता दीप बुझा देना

यदि हाल मेरी बहना पूछे, मस्तक तिलक मिटा देना
यदि इतना कहने से न माने, तो राखी तोड दिखा देना

यदि हाल मेरी पत्नी पूछे, मांग सिंदूर मिटा देना
यदि इतना कहने से न माने, तो चूडी तोड दिखा देना
.....जय माँ भारती !!!

"जिसे भगवान और खुद पर भरोसा होता है वह कभी भी दुःखी नहीं होता"

"भूत भविष्य की चिंता किये बिना जीवन के हर क्षण का आनंद लेना चाहिए"

"किसी का किया हुआ अहसान भूलो मत और अपना किया हुआ अहसान कभी याद मत करो"

"छोटे छोटे रोज के सुधार आश्चर्यजनक परिणाम की तरफ ले जाते हैं"

"उस तरह का इंसान बनों जिस तरह के इंसान से तुम मिलना चाहते हो"

दी कांगड़ा को-ऑपरेटिव बैंक लि. की 10वीं शाखा का शुभारम्भ (उत्तम नगर, दिनांक 09.10.2017)

कांगड़ा को आपरेटिव बैंक एक छोटी सी शुरूआत। आज इस बैंक की दसवीं शाखा का शुभारम्भ किया गया है। यह शाखा उत्तम नगर क्षेत्र तथा द्वारका वासियों के लिये कांगड़ा बैंक के निर्देशक मण्डल का, एक तोहफा है। इस शाखा के खुलने से नजफगढ़ तक के वर्तमान सदस्यों और नए बनने वाले सदस्यों को लाभ होगा। वैसे तो कांगड़ा बैंक ने तकनीक के क्षेत्र में इतना विकास किया है कि कोई भी सदस्य या खाता-धारक, किसी भी शाखा से बैंक सम्बन्धी कार्य कर सकता है। फिर भी जो खाता धारक अपने बैंक में स्वंय जाना चाहते हैं उनके लिए इस शाखा की सेवाएं मिल सकेंगी। बैंक की दसवीं शाखा का उदघाटन वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री बी०के० अग्रवाल ने किया। श्री बी०के० अग्रवाल, जिला ऊना और कांगड़ा के जिलाधीश रहे हैं। धर्मशाला में कमिशनर भी रहे हैं और दिल्ली में हिमाचल भवन के रैजिडैन्ट कमीश्नर के पद पर कार्य कर चुके हैं। बाद में भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर सयुक्त सचिव के रूप में काम करने के बाद आज कल प्रशिक्षण ले रहे हैं और शीघ्र ही हिमाचल सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव का कार्य भार संभालेंगे।

श्री बी०के० अग्रवाल ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हिमाचल के लोग मेहनती और ईमानदार हैं। यही कारण है कि एक छोटी सी शुरूआत, आज दसवीं शाखा का उद्घाटन हो रहा है। इस बैक की प्रगति के आंकड़े देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। यह प्रगति सराहनीय है। श्री अग्रवाल ने कहा 42 हजार सदस्यों वाला यह को-आपरेटिव बैंक न केवल हिमाचल की शान है बल्कि दिल्ली में इस बैंक ने जो सराहनीय कार्य किया है उसके कारण दिल्ली में रहने वाले हिमाचल वासियों के अतिरिक्त, दिल्ली में बसे, देश के अन्य भागों के लोगों को भी इस बैंक का लाभ मिल रहा है। श्री अग्रवाल ने, कांगड़ा बैक की दसवीं शाखा के लिए बैंक के निर्देशक मण्डल तथा सभी सम्बन्ध लोगों को बधाई दी। उद्घाटन भाषण से पहले, बैंक के मानद मुख्य सलाहकार श्री बलदेवराज शर्मा ने बैंक की प्रगति के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार कांगड़ा बैंक ने, धीरे-धीरे लेकिन मजबूत गति से, यह उपलब्धियां प्राप्त की है। श्री बलदेव राज शर्मा ने कहा आज इस बैंक की दस शाखाएं हो गई हैं। दो शाखाएं खोलने की, रिजर्व बैंक की स्वीकृति हमारे पास है। इस वितीय वर्ष में रणजीत नगर और नांगलोई में यह दो शाखाएं खुल जाएगी और उस समय कांगड़ा बैंक 12 शाखाओं वाला बैंक हो जायेगा। रणजीत नगर और नांगलोई में दो शाखाएं खुलने के बाद उस क्षेत्र के लोगों को सुविधा मिलेगी। श्री बी०आर० शर्मा ने बैंक में किए जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यो का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बैंक अपने लाभ से बैंक सदस्यों के बच्चों को लगभग 20,00,000/- रूपये का वजीफा तथा प्रोत्साहन राशि हर वर्ष वितरित करता है और इस वर्ष भी यह क्रम जारी रखा है। श्री शर्मा ने कहा कि हमने सदस्यों को इस वर्ष भी 18% डिवीडैन्ड वितरित किया है। बैंक के पूर्व अध्यक्ष श्री अत्तर चन्द परमार ने सभा को सम्बोधित करते हुए बैंक के लिए तकनीकी महत्व और बैंक में तकनीकी उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने इस दसवीं शाखा खोलने के लिए जिन-जिन लोगों ने भी मेहनत की है उन सबका आभार व्यक्त किया।

बैंक के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास ने सभा को सम्बोधित करते हुए बैंक से जुड़े सभी सदस्यों, कर्मचारियों और निर्देशक मण्डल को बधाई दी। श्री लक्ष्मीदास ने कहा कि कांगड़ा बैंक की यह जो प्रगति दिखाई दे रही है उसका कारण है कि कांगड़ा बैंक का निर्देशक मण्डल सभी निर्णय, सर्वसम्मति से लेता है। निर्देशक मण्डल द्वारा लम्बी और गहरी सोच विचार के बाद सभी चुनौतियों और स्थितियों का अध्ययन करते हुए बैंक सम्बन्धी निर्णय लिये जाने के कारण, निर्णयों में चूक की संभावानाएं कम रह जाती हैं। बैंक के निर्देशक मण्डल में एक राय, बैंक की बहुत बड़ी शक्ति है और इसी मजबूती के कारण, कांगड़ा बैंक दिल्ली का सबसे बड़ा सहकारी बैंक बनकर उभरा है।

बैंक के उपाध्यक्ष श्री शक्ती चन्द्र शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। बैंक की दसवीं शाखा के उदघाटन समारोह में बैंक के पूर्व अध्यक्ष श्री ओ-पी-भारद्वाज, बैंक के निर्देशकों, पूर्वी दिल्ली नगर निगम के पार्षद श्री अजय शर्मा, दक्षिण दिल्ली के स्थानीय निगम पार्षद श्री राजदत्त गहलोत तथा अन्य गण मान्य व्यक्तियों ने, इस उद्घाटन समारोह की इज्जत बढ़ाई। समारोह में क्षेत्र के बड़े पैमाने पर लोगों ने भाग लिया। बैंक की दसवीं शाखा ने 9 अक्टूबर शाम को अपना कार्य शुरू कर दिया। शाखा के नवीनी करण का कार्य समय पर पूरा न हो पाने के कारण, कार्य शुरू करने में थोड़ी कठिनाई हुई। लेकिन नव नियुक्त कर्मचारियों की सक्रियता के कारण काम समय पर शुरू हो सका। समारोह शुरू होने से पहले हवन और पूजा भी की गई।

निज संवाददाता द्वारा

कांगड़ा बैंक की सफल कहानियां

नाम - सरदार अवतार सिंह
आयु - 57 वर्ष

नाम - सरदार सुरमुख सिंह

प्र. आप दिल्ली कब आये थे ?
उ. मैं 1979 में दिल्ली आया था।

प्र. आपने दिल्ली में आते ही क्या किया ?
उ. मैने दिल्ली में आकर एक पुरानी टैक्सी खरीदी और तीन साल तक उसे चलाया।

प्र. कांगड़ा बैंक के साथ कब जुड़े।
उ. में कांगड़ा बैंक का 1994 में सदस्य बना। उस समय बैंक का मुख्यालय पहाड़गंज था। वहीं का मैं सदस्य था।

प्र. आपने कांगड़ा बैंक से गाड़ी कब खरीदी।
उ. मैंने 1995 मे, कांगड़ा बैंक से दो गाड़ियों का ऋण लिया। यह दो गाड़िंया टैक्सी के रूप में चलाई। उस समय तब मेरा छोटा भाई श्री सुरमुख सिंह भी दिल्ली आ गये थे। जो दो गाड़ियां खरीदी थी उसमें से एक मैं चलाता था और दूसरी गाड़ी मेरा भाई सुरमुख सिंह चलाता था। बाद में तीसरा भाई श्री कुलदीप सिंह भी दिल्ली आ गया वह भी गाड़ी चलाने लगा। उस समय तक हमारे पास पांच छें गाड़ियां हो गई थी।

प्र. इस समय आप के पास कितनी गाड़ियां है।
उ. हमारे पास इस समय 32-33 गाड़ियां है। दो नई गाड़ियां कांगड़ा बैंक से और भी आ रही हैं। हम कांगड़ा बैंक से ही गाड़ियां लेते हैं। यह सब गाड़ियां कांगड़ा बैंक से ली हैं। कई गाड़ियों का ऋण समाप्त हो गया है। वह हमारी गाड़िया हो गई हैं। उनमें से कई गाड़िया पुरानी भी हो गई है, हम कोई पुरानी गाड़ी नही रखते गाड़ी 3-4 साल पुरानी होती है तो हम उसे बदल देते है। इस तरह हमारे पास 35 गाड़िंया है। पहले मेरे छोटे भाई मेरे साथ जुड़े। अब तो मेरे बच्चे मेरे भाइयों के बच्चे भी इसी काम में लग गए हैं।

प्र. कांगड़ा बैंक के बारे मे आपकी क्या राय हैं।
उ. कांगड़ा बैंक अच्छा कार्य कर रहा है। बैंक तरक्की कर रहा है हमें भी बैंक का पूरा सहयोग मिल रही है। खासकर जब से कांगड़ा बैंक की मयूर विहार में शाखा खुली है तब से हमें और भी सुविधा हो गई है। हमारा ट्रांसपोर्ट का जो भी कार्य है, वह कांगड़ा बैंक के सहयोग से ही चल रहा है।

प्र. बैंक के व्यवहार पर आपको क्या कहना है।
उ. कांगड़ा बैंक के स्टॉफ और निर्देशक महोदयों से हमें पूरा सहयोग मिलता है। हमे बैंक के स्टाफ से अच्छी सल्लाह मिलती है। हमें बैंक के व्यवहार में कोई कठिनाई नही है।

प्र. बैंक के लिये आपका कोई सुझाव।
उ. कांगड़ा बैंक ने नियम बनाया हैं कि गाड़ियों का लोन जब 30 लाख से ऊपर हो जाता है तो कांगड़ा बैंक कोई सम्पत्ति गिरवी रखना चाहता है। तीस लाख रूपये की यह सीमा पचास लाख तक होनी चाहिए क्योकि आज कल तीस लाख तो दो गाड़ियों मे ही हो जाता है। यदि कल सीमा पचास लाख हो जाती है तो ट्रासपोंटरों को बड़ी सुविधा होगी।

प्र. आपने बैंक से गाड़ियों के अतिरिक्त भी कोई ऋण लिया है।
उ. हमने बैंक से दो घरों के लिये पहले ऋण लिया थां बाद में दो घरों के लिए फिर ऋण लिया। यह डी.डी.ए. से ली गई दुकानों पर भी बैंक के से ही कर्ज लिया है। हमने कार्यालय के लिए भी बैंक से ही कर्ज लिया है। हम बैंक का समय पर ऋण वापिस करते है इसलिए हम भी खुश है और बैंक भी हमसे प्रसन्न है यहां हमारी जो भी गाडिंया या सम्पति है वह सब कांगड़ा बैंक की सहायता से ही बनाई गई हैं।

प्र. कोई समस्या ?
उ. बैंक बार बार में मूल्य निर्धारित करवाता है या सर्च रिर्पोट बनवाता है। वह नही होना चाहिए एक बार मूल्य निर्धारित हो गया तो वह पांच साल तक मान्य रहना चाहिए। बैंक हमसे गाड़ी के मूल्य का पूरा बयौरा मांगता हैं वह नही होना चाहिए। बैंक ने एक्स शोरूम कीमत का सौ प्रतिशत दे दिया उसका हिसाब मांगना चाहिए बाकी विस्त्त ब्योरा नही मांगना चाहिए।

आपकी जो स्कीम 31 अक्तूबर तक है वह 31 दिसम्बर तक बढ़ा देनी चाहिए क्योंकि दिसम्बर में गाड़ियों पर रिआयत आती है। बैंक को, प्रापर्टी सम्बन्धी भी कोई नई रियायती स्कीमें समय समय पर निकालनी चाहिए। कर्ज वापसी का समय बढ़ा दें तों वह भी एक सुविधा हो सकती है।

निज संवाददाता द्वारा

नाम - श्री लोकेश शर्मा
निवास - उत्तम नगर (दिल्ली)
सदस्य संख्या - 38017
खाता न- 19/52
स्थायी निवासी - बुलन्द शहर(उ.प्र.)

प्र. सदस्य कब बने थे ?
उ. श्री लोकेश जी ने बताया कि वह 2003 में कांगड़ा बैंक के सदस्य बने थे। उनकी पत्नि श्रीमति नीलम शर्मा भी बैंक की सदस्या है। दोनों का करंट अकाउंट कांगड़ा बैंक में ही है ।

प्र. आपने पहला ऋण कब और किसलिए लिया था ?
उ. मैने पहला ऋण घर खरीदने के लिये लिया था। मैंने जो घर खरीदा था वह 2006 में 15 लाख रूपये का था। बैंक से साढ़े आठ लाख रूपये ऋण लिया था शेष राशि अपने पास से जोड़ी थी। जब मैंने घर खरीदा उस समय मैं किराये के मकान में रहता था। कांगड़ा बैंक से ऋण मिलने के कारण अब दिल्ली मे मैं घर का मालिक हूँ। बैंक का ऋण समय पर वापिस कर दिया है। मकान से सम्बन्धित कोई ऋण अब मेरे ऊपर नही है।

प्र. क्या आपने मकान का ऋण वापिस करने के बाद भी कोई ऋण लिया है ?
उ. हाँ, मैने मकान का ऋण वापिस करने के बाद, अपने काम को बढ़ाने के लिए 12 लाख रूपये का कर्ज लिया था। उसकी किश्ते, मैं, समय पर दे रहा था। पिछले वर्ष बैंक ने एक स्कीम निकाली थी। जिसके अन्तर्गत ब्याज दरें कम की गई थी। यह ब्याज दरें नए ऋण लेने वालों के लिए थी। लेकिन पुराने ऋण लेने वाले जो लोग अपनी ऋण वापसी में नियमित थे और तीस से ऊपर किश्तें वापिस कर चुके थे उनके लिये भी बैंक ने यह सुविधा उपलब्ध करवाई थी। इस सुविधा का लाभ उठाते हुए मैने अपना बकाया ऋण वापिस कर दिया और नई स्कीम के अन्तर्गत फिर से 12 लाख रूपये का ऋण ले लिया, मैं इस ऋण की किश्तें समयानुसार अदा कर रहा हूँ। मेरा खाता भी नियमित है और मेरा काम भी आगे बढ़ रहा है।

प्र. बैंक के बारे में आपकी राय क्या है और आपके सुझाव क्या हैं ?
उ. बैक मेरे लिए बहुत अच्छा है। मैं पिछले 15 वर्ष से करंट खाता चला रहा हूँ। मुझे कोई कठिनाई नही है। बैक की सर्विस अच्छी है। पहले मेरा खाता रोहिणी में था। अब मैने अपना खाता जनकपुरी में ट्रांसफर करवा लिया है। मुझे अच्छी सर्विस मिल रही है।

प्र. बैंक के लिए आपका कोई सुझाव ?
उ. बैंक में यदि कुछ नई सुविधाएं जैसे नैट बैंकिग आदि जोड़ दी जाए तो ग्राहको को अधिक सुविधा मिल सकती है और बैंक की आय अधिक बढ़ सकती है। एटीएम लगने से भी कॉफी सुविधा हुई है। मेरे हिसाब से, बैंक में, हमें कोई कठिनाई नहीं है ।

मैं यह जानता हूँ कि यदि बैक से ऋण लेकर, समय पर उसका भुगतान करें तो, बैक से बड़ी कोई दूसरी सुविधा नहीं हो सकती। श्री लोकेश शर्मा कम्प्यूटर का काम करते हैं। वह नए कम्प्यूटर बेचते भी हैं और पुराने कम्प्यूटर मरम्मत भी करते हैं। श्री लोकेश शर्मा जी की आयु 46 वर्ष है। उनकी पत्नि श्रीमति नीलम शर्मा भी इसी व्यवसाय में हैं। उनका स्वतन्त्र काम है और श्री लोकेश शर्मा का स्वतन्त्र व्यवसाय है। श्री लोकेश शर्मा जी की बैंक में सावधि जमा राशियाँ हैं। जिन पर उन्होने ऋण सीमा ले रखी है। इसकी उन्हें अपना व्यवसाय बढ़ाने में बहुत सहायता मिलती है ।

निज संवाददाता द्वारा

Date of Publication i.e. 13th-14th October, 2017

Reg. No. DELBIL/2013/50868

बैंक सदस्यों एवं कर्मचारियों के वे मेधावी छात्र जिन्होनें सत्र 2016-17 की 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं में 90% या उससे अधिक अंक प्राप्त किये थे और बैंक की 49वीं वार्षिक आम साधारण सभा पर उपस्थित थे, बैंक पदाधिकारियों से सभा में नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र लेते हुए।

Printed and Published by A C Parmar on behalf of The Kangra Co-operative Bank Limited and printed at Royal Impression, 94, State Bank Nagar, Paschim Vihar, New Delhi-110063 and published at B-702, Mahalaxmi Apartments, Plot # 4, Sector-2, Dwarka , New Delhi-110075. Editor: B R Sharma